## प्रतिलेखन संख्या 16

अध्यक्ष जी, जिस समय पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया था उस समय उन्होंने देश की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया था। इसके साथ ही मैं मंत्री महोदय को यह भी स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि शायद उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया कि इस बार जो राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं उनमें रेलवे प्रशासन को केवल दो ही प्राप्त हुए हैं जब कि मैं ऐसा मानता हूँ कि हमारी सेना के बाद अगर किसी ने युद्धकाल में सरहानीय कार्य किया है तो वह रेलवे प्रशासन अथवा रेलवे कर्मचारी और अधिकारी हैं। इसलिए उनके मनोबल को बनाए रखने के लिए और उनको प्रोत्साहित करने के लिए रेल मंत्री को इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिए और इसका प्रयास करना चाहिए कि तो भी इस तरह के प्रोत्साहन मिलें उनमें रेलवे का विशेष ध्यान रखा जाए।

रेल मंत्री महोदय ने अपने वक्तव्य में भी रेलवे कर्मचारियों की प्रशंसा की है या उनको प्रोतसाहन दिलाया है। लेकिन यह प्रोत्सहान शांति–काल में भी बना रहना चाहिए। रेलवे ने युद्धकाल में जो काम किया वह तो देश की रक्षा का महान उद्देश्न था लेकिन उसके बाद देश के निर्माण में या गरीबी मिटाने के लिए जो युद्ध होता है उसमें भी प्रत्येक रेलवे कर्मचारी का मनोबल उसी तरीके से बना रहे इसके लिए भी रेल मंत्री महोदय को कुछ कदम उठाने की आवश्यकता है। मैं ऐसा मानता

हूँ कि वह किसी भी तरीके से करें उनका तरीका कुछ भी हो लेकिन उनको यह करना चाहिए कि जितने भी रेलवे कर्मचारी हैं जो भी रेलवे को मुनाफा हो उसमें वह साझीदार हों। चाहे आप उनको बोनस के रूप में कुछ दें चाहे किसी और तरीके से दें लेकिन हर वर्ग के रेलवे कर्मचारी को मालूम होना चाहिए कि यदि वह देश के निर्माण के संबंध में ठीक तरह से काम करेगा तो उसको पुरस्कार के रूप में या वेतन के अंश के रूप में अपने वेतन के अलावा पैसा मिलेगा। इसी प्रकार इस संबंध में मैं एक और सुझाव देना चाहता हूँ। स्वतंत्रता के बाद रेल प्रशासन भारत सरकार का प्रशासन हो गया लेकिन यह लोकसभा एक विशेष उद्देश्य को लेकर चुनी गई है। यह उस कार्यक्रम का एक नमूना ही है। गांधीजी ने जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला था। धन को वे संयम से व्यय करने के हक में थे।